 ISSN : 2348-0033 (Online) | ISSN : 2249-4944 (Print)

'kf{kd mUu;u e if'k{k.k dh vfuok;rk o mikn;rk

vt yh ilkn
एस0एस0डी0पी0सी0 कॉलेज (समाजशास्त्र विभाग), रूड़की, उत्तराखण्ड, भारत

शिक्षा एक जटिल एवं बहुपक्षीय प्रक्रिया है। जन्म के समय बालक असामाजिक एवं असहाय होता है उसकी न कोई संस्कृति होती है न कोई आदर्श, किन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है वह सामाजिक प्राणी बनता जाता है, उसकी शारिरिक आवश्यकताओं की पूर्ति भोजन द्वारा हो जाती है, किन्तु उसे सामाजिक और सांस्कृतिक मानव बनाने में शिक्षा की महती भूमिका होती है। शिक्षा व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्तियों का संशोधन और मार्गान्तरीकरण करके उसे समाज का एक सक्रिय सदस्य बनाती है, जिससे वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक कर सकता है, इस रूप में शिक्षा जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है इसलिए आदिकाल से किसी न किसी रूप में शिक्षा प्रदान की जाती रही।

समय परिवर्तन के साथ–साथ लोगों की विचारधाराएँ तथा शिक्षा के स्वरूप भी परिवर्तित हुए तथा विकसित समाज की स्थापना के साथ–साथ सामाजिक उद्देश्यों और आदर्शों का भी विकास हुआ जिस समय जिस देश में शिक्षा व्यवस्थाओं का जो स्वरूप रहा, उसी के अनुसार शिक्षा का अर्थ किया गया। प्राचीनकाल में शिक्षा न तो केवल पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित थी और न ही इसे जीविका–उपार्जन का साधन माना जाता था। इसके विपरीत शिक्षा प्रकाश का स्रोत, ज्ञान चक्षु, बुद्धि मयी तथा अन्तज्योतिश्मान के रूप में स्वीकार की जाती थी।

लगभग सभी ने शिक्षा को ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में स्वीकार किया है। प्राचीन व्यवस्था में शिक्षा द्वारा बालकों को सामाजिक व्यवहार के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। प्राचीन यूनान में शिक्षा के द्वारा बालकों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक तथा अध्यात्मिक गुणों के विकास के कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे तथा शिक्षा को आत्म–प्रकाश अथवा आत्मज्ञान के साधन के रूप में स्वीकार किया गया था।

शिक्षा का व्यक्ति के जीवन में महत्व है बिना शिक्षा के किसी भी व्यक्ति का व्यक्तिगत सुव्यवस्थित और सुसंस्कृत नही हो सकता। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है और इसका प्रमुख उद्देश्य है सदैव आगे बढ़ते रहना, अपनी गति से प्रेरित यह सम्पर्क में आने वाले लोगों को भी आगे बढ़ा देती है।

सुकरात का कथन है कि, ''शिक्षा आत्मानुभूति के लिए है''।

शिक्षा दर्शन के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करना है। साथ ही साथ शिक्षा का यह उद्देश्य होना चाहिए कि वह व्यक्ति की योग्यता को इस प्रकार बढ़ाए कि उसके लिए अधिक उपयोगी हो सके, परन्तु विदेशी प्रभावों ने भारत की सामाजिकता को यथा संभव क्षति पहुंचाने के साथ–साथ ही मनमाने ढंग से प्रभावित किया। इसके परिणामस्वरूप इसमें ऐसे दुर्गुण आ गए जिनके कारण किसी भी प्रयत्न से इसमें सुधार लाना संभव नही है। इसकी रूकी हुई विकास प्रक्रिया को क्रियाशील बनाने और इस समाज को अन्य विकसित समाजों के समकक्ष बनाने के लिए यह आवश्यक है कि इसमें आमूल परिवर्तन करके नई सामाजिकता का विकास किया जाए जो अन्य किसी समाज का अनुकरण ना होकर सर्वथा नवीन हो, साथ ही साथ यह भी ध्यान रखना है कि भारत की वह सांस्कृतिक धरोहर जो लम्बे संकटकालीन परिस्थितियों में भी भारतीय सामाजिकता को संरक्षण देती रही है वह भी नवीन समाज से अधिक दूर न हो जाए ।

इस प्रकार शिक्षा का कार्य एक ऐसे नवीन समाज की संरचना करना है जिसका सांस्कृतिक आधार यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर से अधिक दूर न होकर उसके समीप ही हो और वह किसी अन्य संस्कृति जो कितनी ही विकसित क्यों ना हो, का अनुकरण न हो, परन्तु उसमें अन्य विकसित संस्कृति के उत्तम गुणों का समावेश भी किया गया हो।

प्रशिक्षण की आवष्यकता और महत्ता पर आज के विचारकों और बुद्धि जीवि एक मत है ''यही वह सांचा है जिसके द्वारा व्यक्ति का व्यक्तित्व ढाला और वातावरण बदला जाता है। अनेक मतभेदों के बावजूद अधिकांश चिंतक इसके दो घटकों कुशल प्रशिक्षक एवं अनुकूल वातावरण की इस महत्वपूर्ण आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों में विभेद हो सकता है, पर मूलतः इसके उद्देश्य दो ही हैं वैयक्तिक और सामाजिक विकास इसमें प्रधानता वैयक्तिक विकास की ही है। क्योंकि इसी की नींच पर सामाजिक विकास भी टिका हुआ होता है।

कुछ वैज्ञानिकों और तकनीकी शिक्षा सम्पनन व्यक्तियों के भरोसे नयी सदीं की आवश्यकता की पूर्ति संभव नही है। इसीलिए 21वीं सदी के लिए व्यापक शिक्षा की मांग की जा रही है। सबके लिए शिक्षा तथा आजीवन शिक्षा की अवधारण ाा मूल बिन्दू बनकर उभरी है, समझ बनी है कि शिक्षण व्यवस्था का व्यापक उद्देश्य ऐसे मनुष्यों का सृजन करना होना चाहिए जो नये काम को करने में सक्षम हो यानी जो दूसरे लोगों के कार्यो को मात्र दुहराये नही। साथ ही ऐसे मनुष्यों का सजन करना जो रचना, अनुसंधान और आविष्कार कर सके। जिनके मस्तिष्क समीक्षा तथा परीक्षण करने में दक्ष हो, जो दूसरे के विचारों को तर्क के जरिए परखने में समर्थ हो। यह लक्ष्य नगरीय समाज की व्यापक भागीदारी एवं शिक्षा की व्यापक साझेदारी से ही सफल बनाया जाना संभव है परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त सफलता का पूरा लाभ नही मिल पा रहा, शिक्षा को उद्यम के रूप में विकसित नही किए जाने के कारण यह दूसरा सबसे गंभीर संकट बनकर उभरा है। शिक्षा सम्पन्न व्यक्ति अपनी–अपनी शिक्षा की सार्थकता को नौकरी पा जाने के नजरिए से देखता है। वस्तुतः शिक्षा ग्रहण करने के पीछे मुख्य उत्प्रेरक शक्ति नौकरी की प्राप्ति बनी हुई है। इस प्रकार शिक्षा से प्राप्त ज्ञान को उद्यमिता को संस्कृति में ढ़ाले जाने के कारण ज्ञान के उपयोग का संकट खड़ा हो गया है। इसके कारण अनुभव आधारित विकास की प्रक्रिया प्रभावित हो रही है।

fu"d"k%&

शिक्षा को समाजीकरण की एक प्रमुख एजेन्सी के रूप में तथा शिक्षण संस्थाओं को एजेन्ट के रूप में माना गया है। देश में धन का अभाव हमारी शिक्षा की नई नीति की सफलता में प्रश्नवाचक चिन्ह लगाता है कहां से इतना धन ला पायेंगे की सभी कार्यक्रम सुचारू रूप से चल पायें। शिक्षा हर प्रकार से महंगी बनती जा रही है अनौपचारिक शिक्षा के नाम पर कई बेतुकी व अपव्ययी योजनाएँ चल रही हैं। यू0जी0सी0 ने बिना कुछ सोचे समझे महाविद्यालयों के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए 50 विश्वविद्यालयों में (Academic Staff College) बिना किसी तैयारी के खोल दिए, जिनमें अभी से घोर अव्यवस्थाएँ व धन का अपव्यय होने लगा है। उनमें अधिकांश में निर्देशकों की नियुक्तियों में पक्षपात, भाई–भतीजा वाद खुलेआम हो रहा है। यू0जी0सी0 ने इस पद के लिए कोई योग्यता की कसौटियाँ निर्धारित नही की है। इस प्रकार की अन्य कई अपव्ययी तथा भ्रष्टाचार से ग्रस्त नई योजनाएँ देश की शिक्षा व्यवस्था को कितना सुधार पायेंगी यह कहना कठिन है।

lnHk& lph%&

1 सोमदत्त शर्माः उदयीमान भारतीय समाज एवं शिक्षा, गोयल प्रकाशन, जयपुर।
2 डा0 नूर मोहम्मद एवं डा0 एम0 एम0 लवानियाः सामान्य समाजशास्त्र कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।
3 सिंह जे0 पी0, बदलते भारत की समस्याएँ, जानकी प्रकाशन, पटना।
4 डा0 संजीव महाजनः भारतीय समाज, जयपुर पब्लिकेशन।
5 शशी के जैनः भारतीय समाज, ISBN-8188777, 5-74-6 रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर।